मनोवृत्ति तथा सम्बद्ध संप्रत्यय
(Attitude and Related Concepts)

मनोवृत्ति से मिलते-जुलते कई संप्रत्यय(concepts) हैं, जिनके कारण मनोवृत्ति को परिभाषित करने तथा इसके स्वरूप को समझने में कठिनाई होती है। अतः मनोवृत्ति की समुचित

Scanned with CamScanner

जानकारी के लिए निम्नलिखित प्रत्ययों के साथ इसके सम्बन्ध का संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक है:—

(क) मनोवृत्ति तथा विश्वास (*Attitude and Belief*)

वरशेल एवं **कूपर** (*Worchel & Cooper*, 1979) के अनुसार, *"वस्तुओं या विचारों के बीच सम्बन्ध की अभिव्यक्ति को विश्वास कहते हैं।"*[1] इसी प्रकार **क्रेच एवं क्रचफिल्ड** (Krech and Crutchfield, 1948) ने कहा है कि *"विश्वास का तात्पर्य एक वैयक्तिक जगत् के किसी पक्ष के सम्बन्ध में प्रत्यक्षीकरण तथा संज्ञान के एक टिकाऊ संगठन से है।"*[2]

उपर्युक्त परिभाषाओं से पता चलता है कि विश्वास तथा मनोवृत्ति में कुछ **समानताएँ** हैं :— (1) मनोवृत्ति की तरह विश्वास भी टिकाऊ होता है। (2) मनोवृत्ति की तरह विश्वास में भी संज्ञानात्मक संघटक (cognitive component) पाया जाता है। (3) मनोवृत्ति के समान विश्वास में भी व्यवहारात्मक संघटक (behavioural component) पाया जाता है।

फिर भी, इन दोनों में कई स्पष्ट **अन्तर** हैं:— (1) मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक तथा व्यवहारात्मक संघटकों के साथ-साथ भावात्मक संघटक (feeling component) भी उपलब्ध होता है, जबकि विश्वास में यह संघटक नहीं होता है। (2) विश्वास वास्तव में मनोवृत्ति का एक अंश मात्र है। अतः प्रत्येक मनोवृत्ति में विश्वास शामिल होता है, परन्तु प्रत्येक विश्वास में मनोवृत्ति निहित नहीं होती है। (3) मनोवृत्ति दिशात्मक (directional) होती है। यह प्रायः सकारात्मक (positive) या नकारात्मक (negative) होती है। लेकिन, विश्वास में यह गुण नहीं होता है। (4) विश्वास की अपेक्षा मनोवृत्ति में व्यवहारात्मक पक्ष अधिक सबल होता है। विश्वास में भाव-पक्ष के अभाव के कारण व्यवहार या क्रिया करने की तीव्र बाध्यता नहीं होती है, जबकि मनोवृत्ति में भाव-पक्ष की प्रधानता के कारण व्यवहार या क्रिया करने की तीव्र बाध्यता होती है। (5) मनोवृत्ति की अपेक्षा विश्वास का कार्यक्षेत्र अधिक सीमित होता है। (6) मनोवृत्ति की अपेक्षा विश्वास में अन्धविश्वास (superstition) की संभावना अधिक होती है। (7) विश्वास की तुलना में मनोवृत्ति में परिवर्तन की संभावना अधिक होती है, क्योंकि मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक तथा भावात्मक संघटकों के बीच असहमति हो जाने की संभावना अधिक होती है।

(ख) मनोवृत्ति तथा मूल्य (*Attitude and Value*)

मूल्य की परिभाषा देते हुए **चैपलिन** (*Chaplin*, 1975) ने कहा है कि, *"मूल्य का तात्पर्य सामाजिक उद्देश्य या लक्ष्य से है, जिसको प्राप्त करना वांछित समझा जाता है।"*[3]

इसी तरह **वरशेल** एवं **कूपर** (*Worchel & Cooper*, 1979) ने कहा है, *"मूल्य का अर्थ किसी वस्तु या विचार से सम्बद्ध सकारात्मक या नकारात्मक भाव है।"*[4] व्यक्ति

---

1. "Belief is an expression of a relationship among objects or ideas"
—Worchel & Cooper, 1979
2. "Belief is an enduring organization of perceptions and cognitions about some aspect of an individual world."
—Krech & Crutchfield, 1948
3. "Value refers to the social end or goal which is considered desirable of achievement."
—Chaplin, 1975
4. "Value means positive or negative affect attached to an object or idea."
—Worchel & Cooper, 1979

Scanned with CamScanner

के व्यवहार पर मनोवृत्ति तथा मूल्य दोनों का प्रभाव पड़ता है और ये दोनों व्यक्ति के अर्जित गुण (acquired properties) हैं, तथा दोनों में भावात्मक पक्ष प्रधान होता है। फिर भी दोनों दो भिन्न प्रत्यय हैं:— (1) मनोवृत्ति की अपेक्षा मूल्य में भावात्मक पक्ष अधिक प्रधान तथा प्रभावशाली होता है। (2) मनोवृत्ति की तुलना में मूल्य अधिक स्थिर (stable) होता है। फलतः मूल्य में परिवर्तन अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। (3) मनोवृत्ति के निर्माण पर मूल्य का निश्चित प्रभाव पड़ता है, परन्तु मूल्य के विकास पर मनोवृत्ति का कोई निश्चित प्रभाव नहीं पड़ता है। (4) मनोवृत्ति के केवल दो प्रकार हैं—सकारात्मक तथा नकारात्मक। दूसरी ओर मूल्य के कई प्रकार हैं—सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, नैतिक, आर्थिक, आदि। (5) मूल्य में आत्मीकरण (identification) की प्रधानता होती है, लेकिन मनोवृत्ति में नहीं (*Bronfenbrenner,* 1960)। (6) मूल्य का सम्बन्ध बहुधा एक प्रकार की बहुत-सी उत्तेजनाओं से होता है, जबकि मनोवृत्ति का सम्बन्ध किसी विशेष उत्तेजना से होता है।

(ग) मनोवृत्ति तथा मत *(Attitude and Opinion)*

मत को परिभाषित करते हुए **चैपलिन** (*Chaplin,* 1975) ने कहा है कि, *"मत एक विश्वास है, विशेष रूप से ऐसा विश्वास जो अस्थाई होता है और जिसमें परिमार्जन की संभावना बनी रहती है।"*[1]

मनोवृत्ति तथा मत पर्यायवाची (synonymous) नहीं हैं। कारण, दोनों में कई **अन्तर** हैं:—

(1) मनोवृत्ति प्रत्याशी प्रतिक्रिया (anticipatory response) है, जबकि मत या विचार (idea) वाचित अभिव्यक्ति (verbalized expression) है (*K. Young,* 1951)।

(2) व्यक्ति के व्यवहार पर मत की अपेक्षा मनोवृत्ति का प्रभाव अधिक पड़ता है। आरक्षण (reservation) के विपक्ष में हमारा विचार होते हुए भी हम हरिजनों के साथ सामाजिक सम्बन्ध कायम रख सकते हैं, परन्तु नकारात्मक मनोवृत्ति होने पर यह संभव नहीं है।

(3) **एनर्सन** (*Enerson,* 1990) के अनुसार मनोवृत्ति के आधार पर किसी व्यक्ति के व्यवहार की भविष्यवाणी करना मत या विचार की तुलना में अधिक सरल तथा संभव है।

(4) मनोवृत्ति का निर्माण प्रधानतः अचेतन होता है। हमें इस बात की चेतना बहुत कम होती है कि हम किस प्रकार भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियों को सीख लेते हैं। दूसरी ओर मत या विचार का निर्माण प्रधानतः चेतन होता है (*K. Young,* 1951)।

(5) मनोवृत्तियों का व्यवहार सामान्य अभिमुखता (general orientation) के लिए किया जाता है, जबकि मत (opinion) का व्यवहार प्रायः वृहत् मनोवृत्ति की विशिष्ट अभिव्यक्ति (specific manifestation) के लिए किया जाता है (*Hovland, Janis & Kelley,* 1953)।

(6) मत (opinion) में प्रमाणीकरण (verification) की विशेषता अधिक पाई जाती है, जबकि मनोवृत्ति में यह विशेषता बहुत कम पाई जाती है (*Deutsch & Gerard,* 1955)। यह विश्वास कि इस पुस्तक की रचना किसने की है, एक मत है। दूसरी ओर यह विश्वास कि इस पुस्तक का केन्द्रीय गुण क्या है, एक मनोवृत्ति है।

(7) मत अधिक चेतन तथा तर्कसंगत (rational) होता है, जबकि मनोवृत्ति अधिक

---

1. "Opinion is a belief, particularly one that is tentative and still open to modification."
—Chaplin, 1975

Scanned with CamScanner

अचेतन तथा असंगत एवं अतार्किक होती है। विश्वास का जो पक्ष अधिक चेतन तथा तार्किक होता है, उसे मत कहते हैं और विश्वास का जो पक्ष अधिक अचेतन तथा अतार्किक होता है, उसे मनोवृत्ति कहते हैं (*Park*, 1924; *Bogardus*, 1943; *Ford*, 1988)।

(8) मत एक ऐसा विश्वास है, जिसका मापन एक एकांश(single item) के आधार पर संभव होता है, जबकि मनोवृत्ति एक ऐसा विश्वास है, जिसका मापन एक आविष्कारिका (inventory) अर्थात् एकांशों के समूह के आधार पर संभव होता है (*McNemar*, 1946)।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मत(opinion) तथा मनोवृत्ति(attitude) के बीच कई अन्तर हैं और ये दोनों एक-दूसरे से भिन्न संप्रत्यय (distinct concepts) हैं। इन विभन्नताओं के होते हुए भी इन दोनों सम्प्रत्ययों के बीच गहरा सम्बन्ध भी है (Lindzey & Aronson, 1969)।

(घ) मनोवृत्ति तथा शीलगुण (*Attitude and Trait*)

मनोवृत्ति तथा शीलगुण समान अर्थवाले शब्द (synonymous words) नहीं हैं। **किम्बल यंग** (*Kimball Young*, 1951) के अनुसार, *"शीलगुण का तात्पर्य अर्जित एवं मूल मानव-विशेषताओं से है जो स्थिर तथा मूलभूत होती है।"*[1] इस अर्थ में शीलगुण तथा मनोवृत्ति में काफी समानता तथा सम्बन्ध है। फिर भी दोनों में कई **अन्तर** हैं :—

(1) मनोवृत्ति में दिशात्मकता (directionality) होती है, लेकिन शीलगुण में दिशात्मकता नहीं होती है, मनोवृत्ति अनुकूल या प्रतिकूल, सकारात्मक या नकारात्मक होती है। यह या तो पक्ष में होती है या विपक्ष में। लेकिन, शीलगुण में यह विशेषता नहीं पाई जाती है। (2) मनोवृत्ति की अपेक्षा शीलगुण में अधिक स्थिरता (stability) तथा संगति (consistency) पाई जाती है। (3) मनोवृत्ति अर्जित होती है जबकि शीलगुण अर्जित भी होता है और मौलिक (original) भी। (4) मनोवृत्ति में भावात्मक संघटक (affective component) प्रधान होता है जबकि शीलगुण में यह गौण होता है।

(ङ) अभिवृत्ति तथा प्रेरक (*Attitude and Motive*)

अभिवृत्ति (मनोवृत्ति) तथा प्रेरक (प्रेरणा) के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस प्रकार मनोवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करती है, उसी प्रकार प्रेरणा भी व्यक्ति के व्यवहार का एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। व्यक्ति अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहार करता है। ठीक उसी तरह व्यक्ति अपने जैविक या सामाजिक प्रेरक से प्रभावित होकर किसी अन्य व्यक्ति अथवा समूह के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार करता है। इसीलिए, कुछ मनोवैज्ञानिकों ने मनोवृत्ति की गणना एक सामाजिक प्रेरक के रूप में की है।

घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद दोनों के बीच कई **भिन्नताएँ** हैं :—

(1) मनोवृत्ति या अभिवृत्ति पूर्ण रूप से अर्जित होती है जबकि प्रेरक अर्जित होने के साथ-साथ जैविक भी होता है। भूख, प्यास आदि जैविक प्रेरक हैं, जो जन्म के समय भी बच्चों में मौजूद रहते हैं। संबंधन आवश्यकता, अधिकार आवश्यकता, आदि सामाजिक प्रेरक हैं जो बच्चों में जन्म के समय मौजूद नहीं होते बल्कि बाद में वातावरण के प्रभाव से विकसित होते हैं।

[1] "The term trait refers to certain persistent and fundamental human characteristics, both learned and original." —K. Young. 1951

Scanned with CamScanner

(2) प्रेरक की अपेक्षा मनोवृत्ति अधिक जटिल संप्रत्यय है। प्रेरक में केवल एक संघटक (component) होता है जिसे कार्य संघटक (action component) कहते हैं। इसलिए, प्रेरक को क्रियात्मक प्रक्रिया (conative process) से सम्बद्ध माना जाता है। दूसरी ओर मनोवृत्ति में संज्ञानात्मक संघटक(cognitive component), भावात्मक संघटक(affective component) तथा क्रियात्मक संघटक (action component) तीनों शामिल होते हैं।

(3) मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना सरल है जबकि प्रेरक में परिवर्तन लाना कठिन है। मनोवृत्ति में कई विधियों द्वारा मात्रात्मक या दिशात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। लेकिन, जैविक प्रेरक में परिवर्तन संभव नहीं है। सामाजिक प्रेरक में भी परिवर्तन लाना अपेक्षाकृत कठिन है।

Scanned with CamScanner